प्र०:— अन्तरसमूह संघर्ष से आप क्या समझते हैं?

Ans:— अन्तर समूह संघर्ष को सही तरीके से समझने के लिए सर्वप्रथम अन्तर समूह व्यवहार को मोटे तौर पर समझना आवश्यक है। दो या दो से अधिक समूहों द्वारा आपस में की गई अन्तःक्रिया की विभिन्न प्रक्रियाओं को अन्तरसमूह व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। संगठन या व्यापारिक संस्थान में अलग-अलग ईकाई या विभाग होते हैं। प्रत्येक ईकाई या समूह अपने कार्य को दूसरे समूह या ईकाई के कार्यों से विशेष ढंग से देखते पाए जाते हैं। फलतः संगठन के विभिन्न ईकाईयों में कार्यरत कर्मियों के विचारों में भिन्नता उत्पन्न होने लगती है। तत्पश्चात धीरे-धीरे अन्तर समूह संघर्ष की परिस्थिति पैदा हो जाती है। अन्तर समूह संघर्ष में एक समूह का दूसरे समूह से विश्वास उठ जाता है। फलतः प्रत्येक समूह के सदस्यों की बीच आम धारणा ऐसी बन जाती है कि ~~दूसरे~~ दूसरे ईकाई या समूह के सदस्यों द्वारा जान-बूझकर ऐसा कार्य किया जा रहा है जिससे उनके लक्ष्य प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही है। अर्थात उनके इस व्यवहार से नकारात्मकता का भाव प्रकट हो रहा है। यहाँ देने लायक है कि इस प्रकार की प्रक्रिया अन्तर समूह (Inter group) के साथ-साथ अन्तरा समूह (Intra group) के व्यवहारों में भी देखने को मिलता है। अन्तर समूह संघर्ष में अग्रांकित चार तत्वों की प्रधानता पाई जाती है—

(I) संगठन के दो समूहों या ईकाइयों के बीच परस्पर विरोधी अभिरुचियों का होना।

(II) दोनों समूहों द्वारा यह विश्वास किया जाय कि दूसरे समूह द्वारा उनकी अभिरुचियों या लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा को अवरुद्ध किया जाय

(III) दोनों समूहों द्वारा इस तरह के परस्पर विरोधी अभिरुचियों की पहचान करना

(IV) प्रत्येक समूह द्वारा ऐसा व्यवहार किया जाना जिससे एक-दूसरे का लक्ष्य अवरुद्ध हो।

अन्तर समूह संघर्ष के संबंध में